

衆生根性各異，思想不同，入佛旨趣，亦有別馬，根異者何？概分最上等也。旨別者何？可分大、小、偏、錯、邪、諸類。上、中、下、下下、諸等也。

李炳南 念無邊衆生，迷惑顛倒，受苦酬業，無有盡時。發大悲心，思與拔救。忻羨佛力，廣求智通，以期一切成辦，普度他危，發是心歸佛門者，名之曰大，是最上根人所爲者也。自痛五蓋十纏，牽引六道，頭出頭沒，劫經恒沙。椎心泣血，謝絕塵緣，誓求出離，住涅槃樂，發是心歸佛門者，名之曰小，是上根人所爲者也。

佛門者，名之曰偏，是中根人所爲者也。特才傲物，好高喜名，欲借梵典，廣其見聞。著述雄談，眩耀博雅，顛倒經義，逞依凌人，發欲，不畏因果，百計營求，幻想佛是心歸佛門者，名之曰錯，是下根人所爲者也。

佛門者，名之曰偏，是中根人所爲者也。特才傲物，好高喜名，欲借梵典，廣其見聞。著述雄談，眩耀博雅，顛倒經義，逞依凌人，發欲，不畏因果，百計營求，幻想佛是心歸佛門者，名之曰錯，是下根人所爲者也。

李炳南 發大心者，自無論矣，小心者，亦是正途。即畏禍希福而歸佛者，雖云是偏，尚不失爲小果。若爾錯而邪者，不獨貽累佛門之羞，恐終自罹其殃，正可憫也。夫初機登途有所擇焉。

首語卷

衆生根性各異，思想不同，入佛旨趣，亦有別馬，根異者何？概分最上等也。旨別者何？可分大、小、偏、錯、邪、諸類。上、中、下、下下、諸等也。

也。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。

。